भिलाई नगरों के कार्यशील महिलाओं का प्रवास प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

लक्ष्य सेन , अंकिता पांडेय

*शोध छात्र, भूगोल अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

भाोध सारांश– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग–भिलाई नगरों में कार्यशील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक आँकडों पर आधारित है। जुड़वा नगरों में कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप की जानकारी प्राप्त करने हेतु कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए उद्दे य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्य ाील महिलाओं तथा उनके परिवारों से सम्बंधित जानकारियाँ साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों से कुल 1202 कार्य ाील महिलाओं से जानकारी प्राप्त की गई। चयनित कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का विस्तृत अध्ययन करने हेतु उनको जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया है। प्रथम वर्ग में वे महिलाएँ जिनका जन्म दुर्ग जिले के विभिन्न विकासखण्डों में हुआ है, उन्हें जिले के अंदर से प्रवासित कार्यशील महिलाओं में रखा गया, जबकि द्वितीय वर्ग में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को एवं तृतीय वर्ग में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं के आप्रवास की मात्रा एवं दूरी के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए हेगरस्ट्रेण्ड (1967) के दूरी ह्रास (Distance Decay) क्षेत्रीय अन्तर्क्रिया संकल्पना का प्रयोग किया गया।

शब्द कुंजी – दुर्ग–भिलाई नगर, कार्यशील महिलाएँ, प्रवास प्रतिरूप, दूरी ह्रास।

नगरोन्मुख प्रवास की मात्रा एवं दिशा निर्धारित करने में औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक प्रगति, जिसमें रोजगार की उपलब्धता अधिक होती है, आकर्षण के विशेष केन्द्र बिन्दु होते हैं। बोग (1959) ने मात्र उस निवास परिवर्तन को प्रवास कहा, जिसमें व्यक्ति विशेष के सामुदायिक लगाव में पूर्णतः परिवर्तन और पुर्नसमायोजन होता है, वहीं जैलिन्स्की (1971) ने प्रवास को, मृत्युदर व जन्म दर की तरह पूर्णतः जैविक घटना नहीं, बल्कि भौतिक और सामाजिक लेनदेन की प्रक्रिया बताया है। वर्तमान समय में अधिकांश प्रवास औद्योगिकरण, प्रौद्योगिक प्रगति तथा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का प्रतिफल है, तथापि नगरोन्मुख प्रवास में आर्थिक उद्देश्य अधिक प्रबल होते हैं। इसके अतिरिक्त तीव्रगामी यातायात के साधनों ने प्रवास में दूरी के प्रभाव को कम कर दिया है। यद्यपि सामाजिक व्यवस्था के तहत महिलाओं के द्वारा अधिक प्रवास किए जाते हैं, जिसमें वैवाहिक एवं पारिवारिक गतिशीलता अधिक होती है। डेविस (1951) के अनुसार– भारत में इसी वजह से स्त्रियों में प्रवास की मात्रा काफी ऊँची है, जबकि भारतीय जनसंख्या का संचरण निम्न माना जाता है। प्रवास, जनसंख्या का स्वतंत्र, गतिशील एवं मानवीय प्रक्रिया है तथा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का सुंदर सूचकांक भी है, जिसमें मात्र स्थान परिवर्तन ही नहीं होता, बल्कि यह किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय तत्व तथा क्षेत्रीय संबंधों को समझने का प्रमुख आधार भी है (गोसल, 1961)। प्रवास एक स्वतंत्र मानवीय एवं सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की हर गतिशीलता चुनावपरक होती है, तथापि महिला प्रवास में महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता अधिक उत्प्रेरक कारक रहे। भारत के आंतरिक प्रवास में औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र आप्रवास के प्रमुख आकर्षण रहे हैं। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ के दुर्ग–भिलाई नगर प्रवासियों के प्रमुख आकर्षण केन्द्र हैं।

अध्ययन का उद्दे य – प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्दे य दुर्ग–भिलाई नगर में कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र

दुर्ग नगर – वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ में तीव्र नगरीकरण के फलस्वरूप दुर्ग नगर छत्तीसगढ़ का प्रमुख व्यापारिक, वाणिज्यिक एवं औद्योगिक नगर बन गया है। दुर्ग नगर के विकास में भिलाई औद्योगिक नगर की निकटता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए इन्हें छत्तीसगढ़ का जुड़वा नगर कहा जाता है। दुर्ग नगर, ि ावनाथ नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। दुर्ग नगर जिले का प्र ाासनिक केन्द्र एवं जिला मुख्यालय है तथा यह राज्य की राजधानी रायपुर से 45 किलोमीटर एवं भिलाई नगर से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस नगर का विस्तार 21°9′3′′ से 21°14′1′′ उत्तरी अक्षां ा तथा 81°14′43′′ से 81°19′13′′ पूर्वी दे ाान्तर के मध्य है ¼मानचित्र 1.1)। दुर्ग नगर की समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 300 मीटर है। इस नगर से होकर राश्ट्रीय राजमार्ग–58 गुजरती है। वर्तमान में दुर्ग नगर 60 वार्डो में विभक्त है। वर्श 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर की कुल जनसंख्या 2,68,806 व्यक्ति है जो नगर के 54. 11 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर का जनसंख्या घनत्व 4968 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। दुर्ग नगर में जनसंख्या वृद्धि दर 1951–61 के द ाक में सर्वाधिक 132.67 प्रति ात रहा, जो भिलाई नगर में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना का प्रतिफल था। सबसे कम वृद्धि वर्तमान द ाक (2001–2011) में 15.61 प्रति ात प्राप्त हुई।

भिलाई नगर – भिलाई नगर छत्तीसगढ़ का सर्वोपरिय औद्योगिक नगर हैं। इस नगर का विस्तार 21°7′53′′ से 21°15′33′′ उत्तरी अक्षां ा तथा 81°19′13′′ से 81°26′3′′ पूर्वी दे ाान्तर के मध्य है (मानचित्र 1.1)। भिलाई नगर का विकास भिलाई ग्राम से हुआ जो नगर के उत्तरी भाग में स्थित हैं। वर्ष 1956 में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के पूर्व तक भिलाई एक छोटे से ग्राम के रूप में था। भिलाई नगर के औद्योगिक विकास में नंदिनी चूना पत्थर क्षेत्र एवं दल्ली राजहरा के लौह खदानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस नगर से होकर राश्ट्रीय राजमार्ग–58 गुजरती है। इसकी समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 294 मी. है। भिलाई नगर रायपुर से 30 किमी. एवं दुर्ग से 12 किमी. की दूरी पर स्थित है।

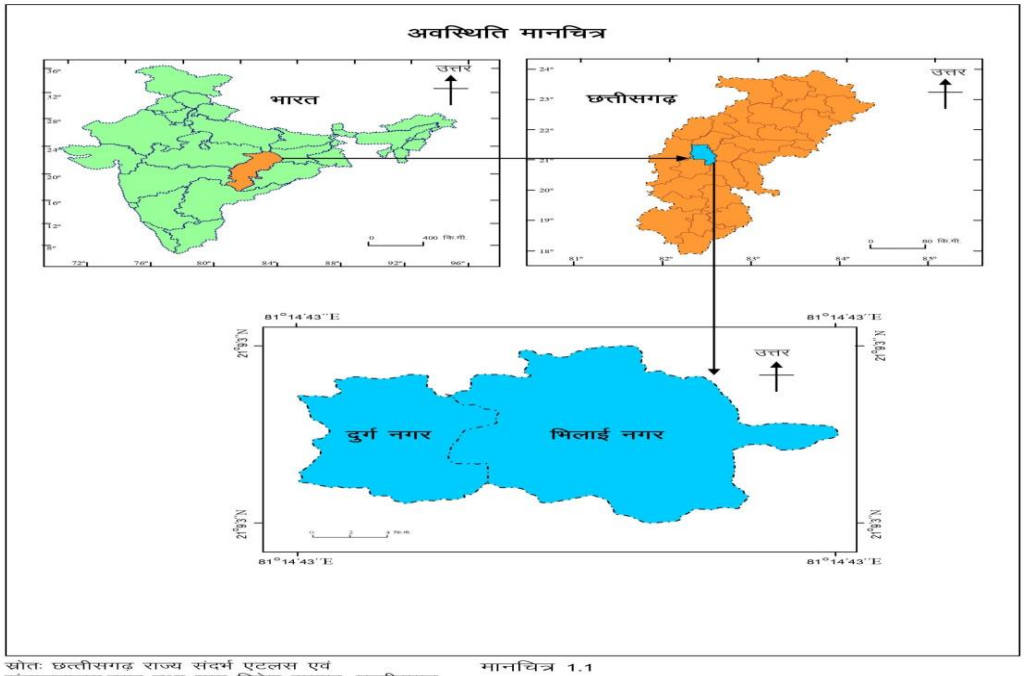

स्रोतः छत्तीसगढ़ राज्य संदर्भ एटलस एवं संचालनालय,नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर, छत्तीसगढ़

मानचित्र 1.1

वर्तमान में भिलाई नगर 70 वार्डो में विभक्त है। नगर का कुल क्षेत्रफल 142.32 वर्ग कि.मी. है। वर्श 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की कुल जनसंख्या 6,27,734 है। 2011 की जनगणना के अनुसार भिलाई नगर का जनसंख्या घनत्व 4411 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। भिलाई नगर में जनसंख्या वृद्धि दर 1961–71 के द ाक में सर्वाधिक 102.5 प्रति ात रही, जो लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के बाद भिलाई नगर में सर्वाधिक जनसंख्या आप्रवास का प्रतिफल रहा। वर्ष 2001–11 के द ाक में जनसंख्या वृद्धि दर 15.61 प्रति ात प्राप्त हुई।

आँकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र – प्रस्तुत भाोध मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। इनमें नगरीय कार्य ाील महिलाओं के आप्रवास संबंधी आँकड़ें प्रमुख हैं, तथापि नगर से संबंधित भौगोलिक एवं सांस्कृतिक जानकारी द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आँकड़ें – दुर्ग–भिलाई नगरों में कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप संबंधी विविध जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। जिसमें कार्य ाील महिलाओं के आप्रवास से संबंधित प्रश्न रखे गए। दुर्ग–भिलाई नगरों में कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का विस्तृत अध्ययन करने हेतु कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए उद्दे य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्य ाील महिलाओं तथा उनके परिवारों सें संम्बंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। कार्य ाील महिलाओं के कार्यिक प्रतिरूप को दृष्टिगत रखते हुए संबंधित जानकारी उसके कार्यस्थल यथा– भाासकीय एवं अभाासकीय कार्यालय, ि ाक्षण संस्थानों, अस्पताल, दुकानों, निर्माण स्थलों, गंदी बस्तियों में जा कर प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों की कुल कार्यशील महिलाओं में से 1202 (दुर्ग नगर से 588 एवं भिलाई नगर 614 कार्य ाील महिला) कार्यशील महिलाओं का चयन किया गया। चयनित कार्यशील महिलाओं के प्रतिदर्श आकार का सांख्यिकी विधि द्वारा प्रतिदर्श माध्य एवं वास्तविक माध्य के मध्य प्रसरण का सार्थकता परीक्षण किया गया, जो उच्च सार्थकता स्तर (0.01) पर प्रमाणित हुआ। इसके लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया –

वास्तविक औसत $\overline{\boldsymbol{x}}$ = प्रतिदर्श औसत $(\overline{\boldsymbol{x}}\boldsymbol{s}) \pm (\frac{\boldsymbol{\sigma}}{\sqrt{\boldsymbol{n}}})$

द्वितीयक आँकडें– भाोध में दुर्ग–भिलाई नगर के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के वि लेशण हेतु द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया। दोनों नगरों के जनसंख्या संबंधी आँकड़ें भारतीय जनगणना पुस्तिका 2011 से प्राप्त किया गया। दोनों नगरों के मानचित्र संचालनालय, नगर तथा ग्राम निवे ा रायपुर (छ.ग.) से प्राप्त किया गया।

विधितंत्र– साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों के प्रक्रियान्वयन के लिए सर्वप्रथम अनुसूची में संपादन तथा संकेतीकरण किया गया तथा प्राप्त सूचनाओं को कम्प्यूटर में प्रविष्ट कर वर्गीकरण एवं सारणीयन का कार्य सम्पन्न किया गया। चयनित कार्य ाील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का विस्तृत अध्ययन करने हेतु उनको जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया है। प्रथम वर्ग में जिले के विभिन्न विकासखण्डों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को रखा गया, जबकि द्वितीय वर्ग में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को एवं तृतीय वर्ग में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप के आधार पर चयनित कार्यशील महिलाओं के भौगोलिक स्थानिक प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं के आप्रवास की मात्रा एवं दूरी के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए हेगरस्ट्रेण्ड (1967) के दूरी ह्रास (Distance Decay) क्षेत्रीय अन्तर्क्रिया संकल्पना का प्रयोग किया गया।

कार्यशील महिलाओं का प्रवास प्रतिरूप

महिलाओं की आर्थिक क्रियाशीलता परिवार के गुणात्मक एवं मात्रात्मक स्वरूप को विशेष रूप से प्रभावित करती है, जिससे न केवल महिलाओं की अपितु, परिवार की भी सामाजिक एवं आर्थिक दशा प्रभावित होती है। महानगरीय क्षेत्र में महिलाएँ अपने पति के साथ केवल उसके अनुकरण के लिए ही परिवार सहित प्रवासित नहीं होती हैं, बल्कि उनके प्रवास का मुख्य कारण निर्धनता होती है, जिसमें इन आप्रवासी महिलाओं को नगर में कुछ समय के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं (कुण्डू, 1987)। सामान्यतया महिलाओं के द्वारा जहाँ लघु दूरी के प्रवास अधिक होते हैं, वहीं उच्च शैक्षणिक स्तर की महिलाओं में लम्बी दूरी के प्रवास अधिक होते हैं। कार्यशील महिलाओं की भौगोलिक गतिशीलता उनके कार्यिक संरचना के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण होती है। चयनित कार्य ील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप का विस्तृत अध्ययन करने हेतु उनको जन्मस्थान के आधार पर तीन भौगोलिक प्रतिरूपों में विभाजित कर विश्लेषित किया गया है–

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018

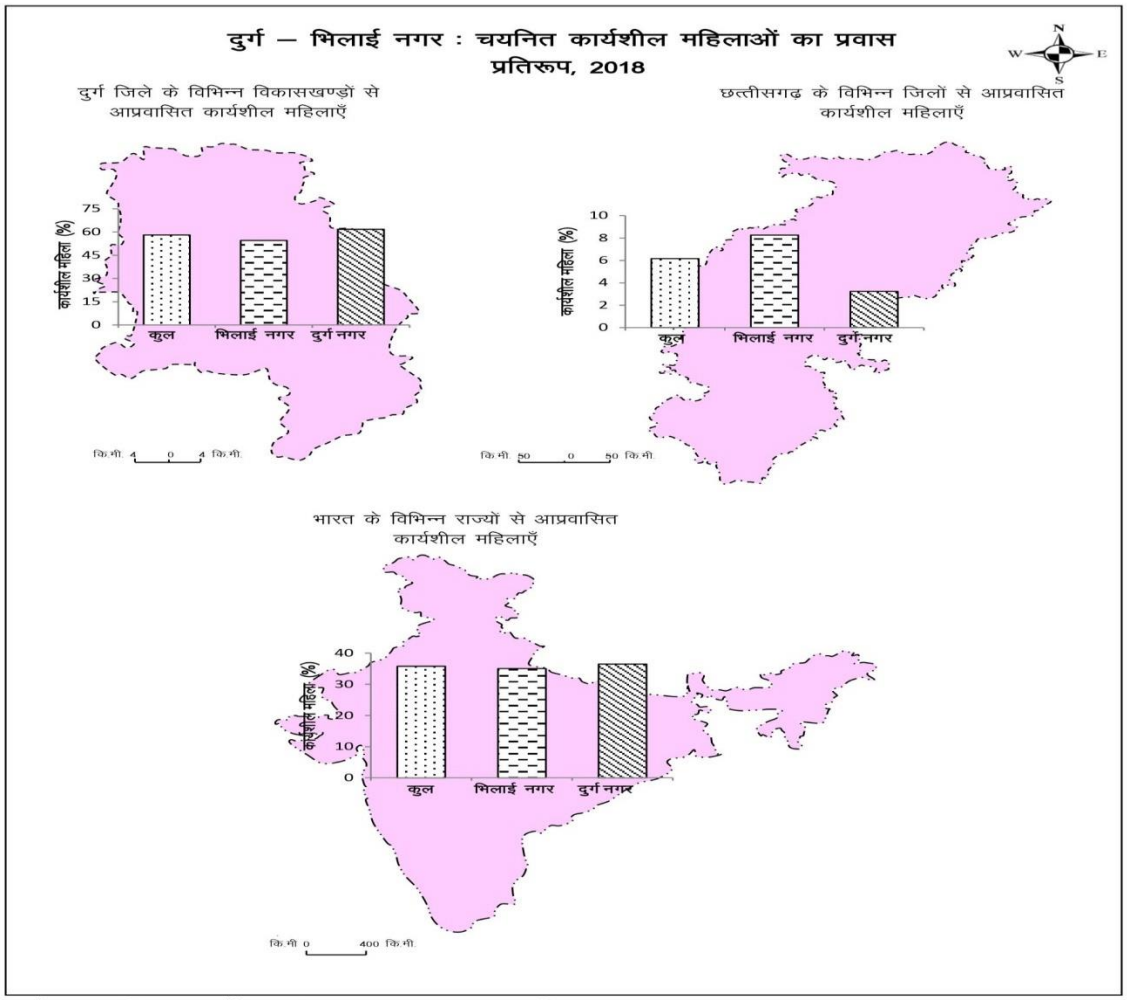

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018 **मानचित्र 1.2**

1. जिले के अंदर से आप्रवास

इस वर्ग में दुर्ग–भिलाई नगर में दुर्ग जिले के विभिन्न विकासखण्डों से आप्रवासित कार्यशील महिलाओं को रखा गया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में ग्रामों से नगरों में प्रवास अधिक हुए हैं। दादारसाई एवं शिवलिंगप्पा (2007) के अनुसार नगरीय क्षेत्रों में उपलब्ध सुविधाएँ अधिक से अधिक ग्रामीण जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। इस प्रकार भिलाई नगर के विकास के साथ–साथ दोनों नगरों में महिला आप्रवास में वृद्धि हुई। सामान्यतः जिले के अंदर लघु दूरी के प्रवास अधिक होते हैं, जिनमें महिलाओं की संख्या अधिक होती है। इस प्रकार कार्यशील महिलाओं के प्रवास प्रतिरूप पर उनके भौगोलिक स्थानिक प्रतिरूप का विशेष प्रभाव दृष्टव्य होता है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगर में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में से 58.07 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ दुर्ग जिले के विभिन्न विकासखण्डों से प्रवासित हुई हैं। दुर्ग जिले के विभिन्न विकासखण्डों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (54.56 प्रतिशत) की तुलना में दुर्ग नगर (61.73 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ ¼lkj.kh Ø- 1-1] ekufp= 1-2 ,oa 1-3½। इस प्रकार यहाँ आप्रवासीय कार्यशील महिलाओं की गतिशीलता में सामाजिक कारक के साथ–साथ आर्थिक उद्देश्य अधिक प्रबल रहे हैं, जिसमें लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर तथा आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर प्रमुख कारक हैं।

2. छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों से आप्रवास

इस वर्ग में दुर्ग–भिलाई नगर में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों (दुर्ग जिले को छोड़कर) से आप्रवासित कार्यशील महिलाओं को रखा गया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में से 6.16 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित हुई हैं। छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (3.23 प्रतिशत) की तुलना में भिलाई नगर (8.96 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ (सारणी क्र. 1.1, मानचित्र 1.2 एवं 1.4)। इस प्रकार दोनों नगरों में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से आप्रवासित कार्यशील महिलाओं में प्रवास विभेद 2.5 गुना प्राप्त हुआ। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगर बड़े एवं छोटे रेल मार्गों तथा सड़क मार्ग से छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों से सम्बद्ध है, जिसके कारण यह नगर आप्रवासियों का मुख्य आकर्षण केन्द्र बन गया है। साथ ही यहाँ रोजगार की उपलब्धता के साथ–साथ पारिवारिक स्थानांतरण भी आप्रवास के प्रबल कारक रहे हैं।

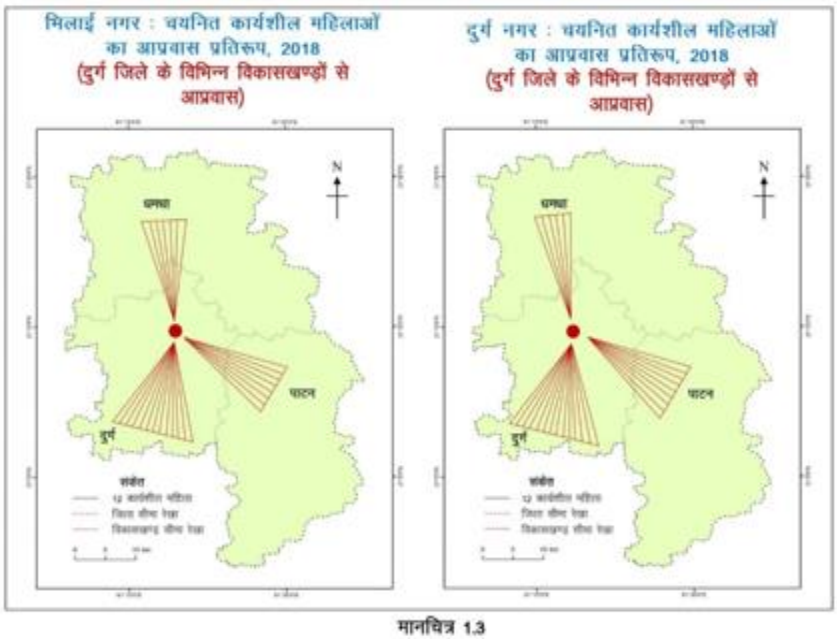

मानचित्र 1.3

3. भारत के अन्य राज्यों से आप्रवास

इस वर्ग में दुर्ग–भिलाई नगर में भारत के अन्य राज्यों (छत्तीसगढ़ को छोड़कर) से आप्रवासित कार्यशील महिलाओं को रखा गया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में से 35.77 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित हुई हैं। भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का अधिक प्रतिशत भिलाई नगर (36.48 प्रतिशत) की तुलना में दुर्ग नगर (35. 03 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ **(lkj.kh Ø- 1-1] ekufp= 1-2 ,oa 1-5)**। अन्तर्राज्यीय प्रवास में कार्यशील महिलाओं की अधिकता का मुख्य कारण दुर्ग– भिलाई जुड़वा नगर में औद्योगिक इकाईयों की स्थापना है। भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना के बाद दुर्ग– भिलाई जुड़वा नगर में कई छोटे–बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित हुई हैं जिसने भारत के अन्य राज्यों की जनसंख्या को भी अपनी ओर आकर्षित किया है।

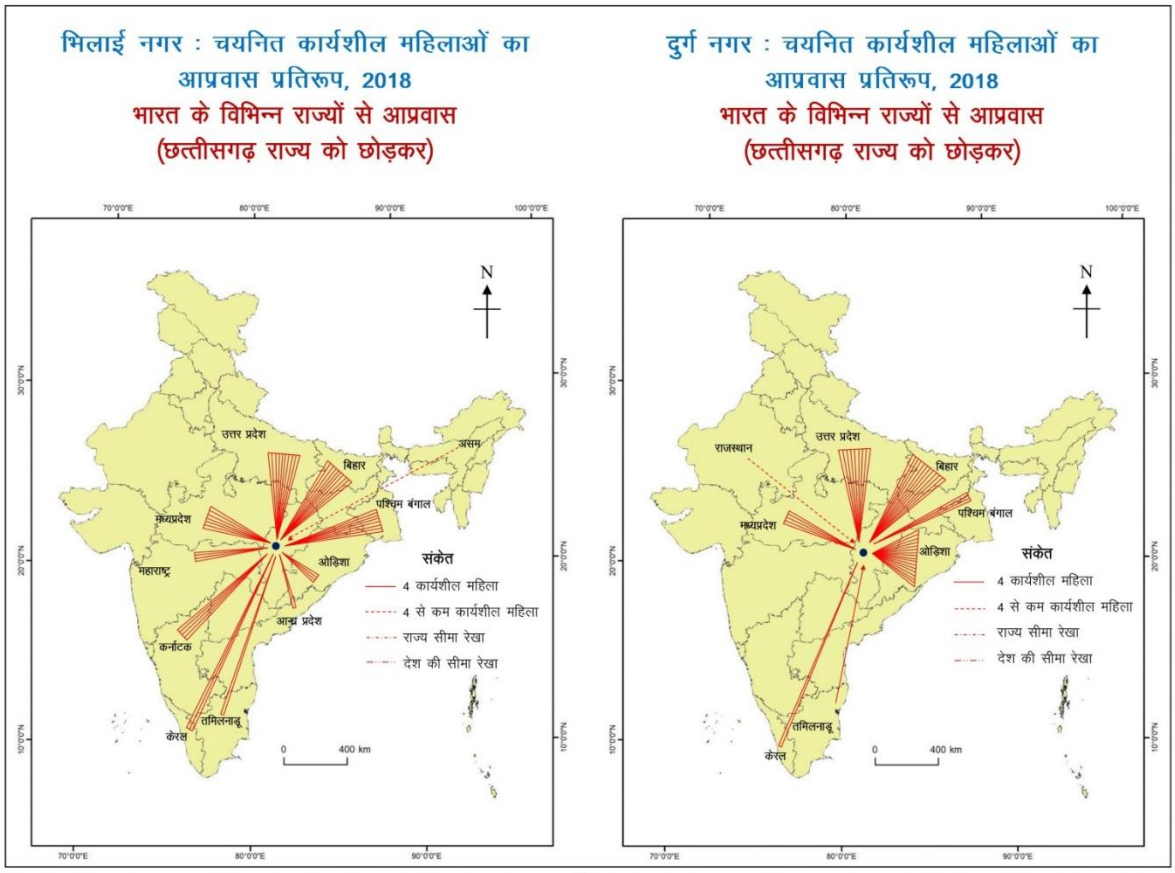

मानचित्र 1.5

दूरी ह्रास (क्पेजंदबम क्मबंल)

सामान्यतया साधारण ग्राफ पर प्रवास की मात्रा तथा दूरी का संबंध अंग्रेजी के 'J' अक्षर के उल्टे स्वरूप में 'τ' में होता है, जिससे स्पष्ट होता है की प्रवास की मात्रा, दूरी के साथ समान रूप से कम नहीं होती, अपितु ह्रास समान दर पर कम होने की प्रवृत्ति रखती है, जिसे ऋणात्मक घातीय संबंध (Negative exponential relationship) कहते हैं, किंतु लघुगणकीय ग्राफ पर प्रदर्शित करने से यह घातीय संबंध सीधी रेखा के रूप में दिखाई देते हैं। इस संबंध को दूरी ह्रास (Distance Decay) कहते हैं। हेगरस्ट्रेण्ड (1967) ने क्षेत्रीय अन्तर्क्रिया संकल्पना में आवासीय परिसंचरण के लिए औसत सूचना क्षेत्र (Mean Information

Field) का प्रयोग किया। शर्मा (2002) ने भिलाई एवं कोरबा औद्योगिक नगरों में आप्रवास की मात्रा एवं दूरी के ऋणात्मक घातीय सम्बन्ध के विश्लेषण में घातीय वक्र का प्रयोग किया। इसी प्रकार गुप्ता एवं शर्मा (1997) ने छत्तीसगढ़ के ग्रामों में वैवाहिक प्रवास के अध्ययन में विवाह एवं दूरी के सम्बन्ध को घातीय वक्र द्वारा प्रस्तुत किया। मिश्रा (1968) ने उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में विवाह–दूरी पर घातीय वक्र का प्रयोग किया। इन सभी अध्ययनों में प्रवास की मात्रा एवं दूरी के मध्य ऋणात्मक घातीय सम्बन्ध की पुष्टि की गई।

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिला आप्रवास की मात्रा एवं दूरी के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए नगर केन्द्र से 100 कि.मी., 250 कि.मी., 500 कि.मी. एवं 1000 कि.मी. के वृत पर प्रति दस हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र में महिला आप्रवासियों की संख्या ज्ञात की गई, जिसमें महिला आप्रवासियों की औसत संख्या प्रति हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र में 100 कि.मी. से कम दूरी पर सबसे अधिक प्राप्त हुई तथा 250 कि.मी. की दूरी के पश्चात महिला आप्रवासियों की संख्या में तीव्रता में कमी हुई, किन्तु इसके बाद महिला आप्रवासियों की संख्या में धीमी गति से ह्रास हुआ। प्रति दस हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र के सभी वृत्तों के मध्यम बिन्दु के लिए आप्रवासियों का घातीय मूल्य निम्नलिखित सूत्र द्वारा परिकलित किया गया–

$$\log y = a + b \log x$$

इस प्रकार दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में चयनित कार्य ाील महिलाओं में प्रवास की मात्रा एवं दूरी के मध्य ऋणात्मक घातीय संबंध सार्थक स्तर पर प्राप्त नहीं हुआ है, क्योंकि भिलाई नगर जहाँ औद्योगिक नगर है, वहीं दुर्ग नगर उसका जुड़वा नगर है। इन दोनों नगरों में द्रुतगामी परिवहन एवं संचार के साधनों की उपलब्धता समान रूप से प्राप्त हुई, जिसके कारण इन दोनों नगरों के आप्रवास प्रतिरूप पर दूरी का प्रभाव नगण्य रहा। उल्लेखनीय है कि शर्मा (2019) द्वारा छत्तीसगढ़ के दस प्रथम श्रेणी के नगरों में आप्रवास प्रतिरूप पर दूरी के प्रभाव को विश्लेषित करने के लिए घातीय वक्र का प्रयोग किया गया, जिसमें चयनित सभी दस नगरों में कार्यशील महिलाओं के प्रवास की मात्रा पर दूरी का प्रभाव नगण्य रहा। इसी प्रकार कोरबा नगर में पटेल (2017) एवं रायपुर नगर में ताम्रकर (2017) द्वारा कार्यशील महिलाओं के प्रवास की मात्रा पर दूरी के प्रभाव को दूरी ह्रास के घातीय वक्र विश्लेषण द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें इन दोनों नगरों में कार्यशील महिलाओं की प्रवास की मात्रा पर दूरी का प्रभाव नगण्य रहा, जो उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करते हैं।

निष्कर्ष– दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कुल चयनित कार्यशील महिलाओं में से 58.07 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ दुर्ग जिले के अन्दर से प्रवासित हुई, जबकि 6.16 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित हुई। इसके विपरीत 35.77 प्रतिशत कार्यशील महिलाएँ भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित हुई। दुर्ग जिले से प्रवासित कार्यशील महिलाओं का जहाँ अधिक प्रतिशत दुर्ग नगर (61.73 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ, वहीं भिलाई नगर में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से (8.96 प्रतिशत) एवं भारत के अन्य राज्यों से (36.48 प्रतिशत) अधिक कार्यशील महिलाएँ प्रवासित हुई। इस प्रकार दोनों नगरों के कार्यशील महिलाओं में प्रवास विभेद नौ गुना प्राप्त हुआ, तथापि भारत के अन्य राज्यों से हुए आप्रवास में महिलाओं के प्रतिशत में जहाँ विभेद कम रहा, वहीं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से प्रवासित कार्यशील महिलाओं के प्रतिशत में अन्तर अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगर भारत के महत्वपूर्ण नगरों एवं महानगरों से रेलमार्ग एवं सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है, इसलिए घातीय मूल्य एवं वास्तविक मूल्यों में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ, जो प्रवास की मात्रा पर दूरी के प्रभाव की नगण्यता को प्रदर्शित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

[1] Bouge, D. J. (1959) : *Principles of Demography*, New York, Johnwiley, p. 213.

[2] Davis, K. (1951) : *The Population of India and Pakistan*, Princetion Univercity Press, U.S., p. 150.

[3] Doddarasaiah, G. and B. N. Shivalingappu (2007) : *Geographical Review of India*, Vol. 66, No. 4, p. 391.

[4] Gosal, G. S. (1961), "Internal Migration in India : A Regional Analysis", *Indian Geographical Journal*, Vol.36, No.2, pp. 109-121.

[5] Hagerstrand, T. (1967) : *Innovation, Diffusion as Spatial Process*, Chicago University Press, Chicago.

[6] Kundu, A. (1987) : *The Quatily Povery and Urban Growth the case of Metropolitan Cities in India*, in S.Mausooc Alam and Fatima Ali Khan (ed.) Poverty in Metropolitan cities concept Publishing Company, New Delhi, p. 41.

[7] Mishra, R. P. (1968) : "Diffusion of Agricultural Innovations", *Prasaranga Geographers*,Vol. 12, No. 1 & 2, p. 50.

[8] Zelinsky, W. (1971) : "The Hypothesis of the Mobility", *Geographical Review*,Vol. 61, pp. 219-249.

[9] गुप्ता, एम. पी. एवं सरला शर्मा (1997) : ''छत्तीसगढ़ में अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास, मध्यप्रदेश के रायपुर जिले का प्रतीक अध्ययन'', *भूविज्ञान,* अंक–12, भाग– 1 एवं 2, पृ. 16–18.

[10] ताम्रकार, मीनाक्षी (2017) : *रायपुर नगर की कार्यशील महिलाओं पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव : एक*

[11] पटेल, यतिनंदिनी (2017) : *कोरबा नगर में आप्रवासीय कार्यशील महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता का भौगोलिक अध्ययन,* अप्रकाि ात शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.).

[12] शर्मा, सरला (2019) : *छत्तीसगढ़ के नगरों में कार्य ील महिलाओं के व्यावसायिक प्रतिरूप एवं जीवन की गुणवत्ता का भौगोलिक विश्लेशण,* अप्रकाि ात भाोध परियोजना, भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.).

[13] शर्मा, सरला (2002) : *औद्योगिक नगरों में जनसंख्या आप्रवास (छत्तीसगढ़ राज्य के भिलाई एवं कोरबा नगरों के विशेष संदर्भ में),* पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 23.